छायावाद के सौ वर्ष और मुकुटधर पाण्डेय

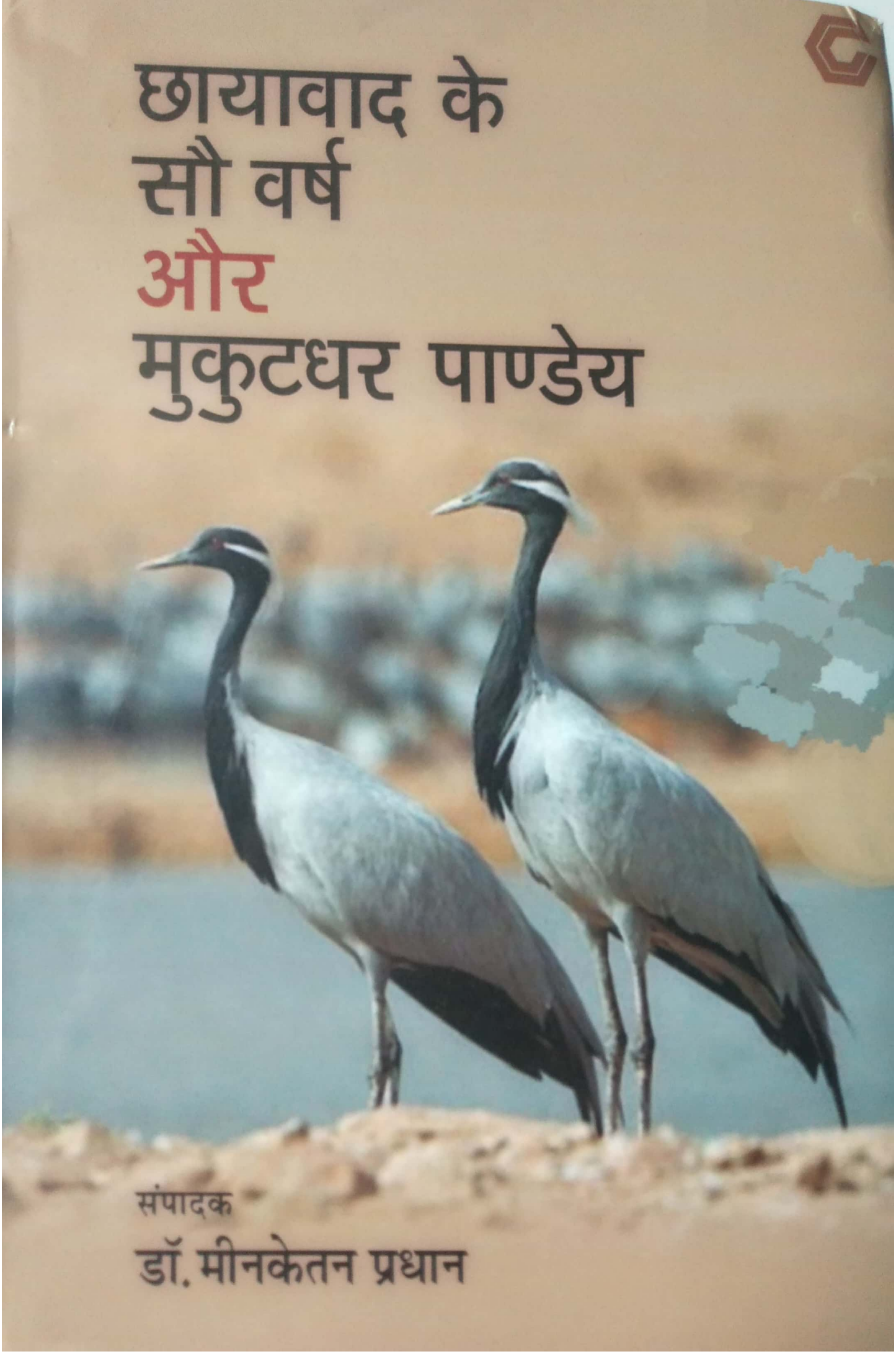

संपादक

डॉ. मीनकेतन प्रधान

Scanned with CamScanner

47.	छायावादी काव्य में राष्ट्रीय-चेतना	निशा मिश्रा, डॉ. रानी अग्रवाल	239
48.	संपूर्णता के कवि : सुमित्रानंदन पंत	डॉ. प्रफुल्ल कुमार	244
49.	निराला की सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि	प्रो. पोटकुले हिरा तुकाराम	248
50.	छायावादी कवियों की सौंदर्य-चेतना	तितिक्षा जी. वसावा	252
51.	छायावादी काव्य में नारी-सौंदर्य	प्रतिभा कुमारी	257
52.	छायावादी काव्य में सौंदर्य-बोध	डॉ. श्रीमती बी. नन्दा जागृत	263
53.	छायावादी सौंदर्य-चेतना	श्रीमती प्रेमलता पाटील	268
54.	छायावाद की भाषा-शैली और गीतात्मकता	अभिषेक सिंह	274
55.	निराला के काव्य में प्रेम एवं शृंगार	डॉ. चंदना शर्मा	286
56.	छायावाद के शीर्ष कवि : जयशंकर प्रसाद	डॉ. सुनीता राठौर	290
57.	छायावाद की विकास-यात्रा	डॉ. राजेश कुमार ठाकुर	293
58.	छायावादी काव्य में नारी-चेतना	पंखी सेनापति	298
59.	छायावादी काव्य में सौंदर्यानुभूति	डॉ. श्रीमती कमोद जैन	302
60.	जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व: प्रेम के संदर्भ में	डॉ. विक्रम सिंह चौहान	309
61.	छायावाद में काल्पनिकता एवं सौंदर्य-चेतना	डॉ. ऋतु माथुर	320
62.	छायावाद का राष्ट्रीय-संदर्भ	डॉ. अर्चना सिसोदिया	325
63.	छायावादी कवियों का परिचय	डॉ. चांदनी मरकाम, श्रीमती विमला नायक	330
64.	छायावाद और क्रांति-पुरूष 'निराला'	डॉ. कल्पना धर	333
65.	छायावाद के प्रतिनिधि कवियों की रचनाएं	बी. के. भगत	338
66.	छायावादी काव्य में नारी अस्मिता	डॉ. सुबोध कुमार शांडिल्य	345
67.	हिन्दी साहित्य में छायावाद	प्रो. के. के. तिवारी	350
68.	छायावादी काव्य: शिल्प एवं सम्वेदना	डॉ. ज्योति किरण	352
69.	छायावाद और भारतीय साहित्य	सबिता. एस	356
70.	छायावादी काव्य में राष्ट्रीय-चिंतन	डॉ. सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह काश्यप	360
71.	छायावादी काव्य में प्रेम और सौंदर्य	प्रियंका राय	363
72.	छायावादी काव्य में शक्ति-तत्त्व	डॉ. रामायण प्रसाद विश्वकर्मा	370
73.	राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य-चेतना और छायावाद	डॉ. सुनीता मंडल	376
74.	भारतीय जीवन-दर्शन और छायावाद	दीपक कुमार	379
75.	सुमित्रानंदन पंत और प्रकृति	डॉ. नीरज चौहान	381
76.	छायावाद और पुनर्जागरण	डॉ. रोशनी मिश्रा	384
77.	छायावाद: काव्यशास्त्रीय मूल्यों की स्वच्छंदता	अनिल कुमार	388
78.	आलोचकों की दृष्टि में 'छायावाद'	कृपाशंकर	391
79.	छायावादी काव्य में राष्ट्रीयता के प्रतिबिम्ब	चंद्रभान सिंह मौर्य 'भानु'	395
80.	छायावाद के प्रमुख कवि : एक सिंहावलोकन	श्रीमती रश्मि शुक्ला	399
81.	निराला के काव्य में प्रकृति के विविध रूप	हर्ष कुमार वर्मा	402
82.	छायावाद का महत्त्व	डॉ. रमेश कुमार तम्बोली	409

Scanned with CamScanner

निराला की सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टि

-प्रो. पोटकुले हिरा तुकाराम

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' हिंदी के युगांतरकारी कवि हैं। छायावादी कवि चतुष्टय में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। निराला के काव्य में प्रगति के स्वर, नवजागरण का संदेश, और राष्ट्रीयता का स्वर प्रमुख रूप से विद्यमान है। इसके साथ ही मानव की पीड़ा, परतंत्रता के प्रति तीव्र आक्रोश, अन्याय, एवं असमानता के प्रति विद्रोह की भावना उनकी कविता का केंद्रीय विषय है। कविवर निराला जी ने अपनी नूतन काव्याभिव्यक्ति द्वारा नये-नये लेखकों को नूतन मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है और नये-नये प्रयोगों द्वारा काव्य के अभिव्यंजना-कौशल को निखारने का प्रयास भी किया है। "जिस प्रकार निराला जी का जीवन नाना प्रकार की असंगतियों, असमानताओं, एवं द्वंद्वपूर्ण परिस्थितियों से परिपूर्ण रहा है, उसी तरह उनकी अनुभूति भी विषमता, विविधता, एवं असंगतियों के साथ द्वंद्व में परिपूर्ण दिखायी देती है। निराला को परिस्थितियों के घात-प्रतिघात ने एक उदबुद्ध, सचेत एवं जाग्रत सर्जक के रूप में ढाल दिया था, उन्हें जीवन और जगत् के प्रति गंभीरता के साथ सोचने एवं समझने के लिए विवश किया था और उन्हें अन्याय, अत्याचार, एवं असमानता के विरुद्ध आवाज बुलंद करने के लिए प्रेरित किया था। निराला का कवि तत्कालीन मानवता पर होने वाले अनवरत अत्याचारों से कराह उठा था, मानव की पीड़ा ने उन्हें व्यथित एवं बेचैन बना दिया था और दीनता एवं कातरता ने उसके हृदय में गहन-वेदना, टीस, छटपटाहट, एवं आक्रोश को कूट-कूट कर भर दिया था। उच्चवर्ग की तानाशाही ने उसे वर्ग विद्रोह के लिए विवश किया था, सामाजिक वैषम्य ने उसे तत्कालीन समाज में क्रांति उत्पन्न करके एक नये समाज की रचना के लिए प्रेरित किया था।"[1]

निराला की प्रमुख रचनाएं हैं: अनामिका (1923), परिमल (1926), गीतिका (1936), तुलसीदास (1938), कुकुरमुत्ता (1948), अणिमा (1943), नये पत्ते (1946), अर्चना (1950), आराधना (1953), गीतगुंज (1954), आदि।

निराला की रचनाओं में आक्रोश एवं विद्रोह की भावना मुख्य रूप से है, उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से समाज के विभिन्न पीड़ित वर्गों के प्रति सच्ची सहानुभूति प्रकट की है। उनके काव्य

Scanned with CamScanner

का मूल स्वर क्रांतिकारी एवं विद्रोही भावनाओं से युक्त है। उन्होंने सामाजिक विषमता के विरुद्ध आवाज उठाते हुए सामान्य वर्ग की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण किया है :

चाट रहे जूठी पत्तल वे सभी सड़क पर खड़े हुए।
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।।

निराला जी के काव्य में सामाजिक विषमता के प्रति आक्रोश सर्वत्र दिखायी देता है। उच्चवर्ग द्वारा सामान्य जनता पर किये गये अन्याय उनसे देखा नहीं जाता इसके लिए वह भगवान् से भी प्रार्थना करके इन दु:खियों के दु:ख दूर करने की बात करते हैं। इसी तरह मानव के द्वारा मानव पर किये गये अत्याचारों को वे सहन नहीं करते थे। अपनी लेखनी से 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर' जैसी कविता में गरीबों के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हैं। उनकी पीड़ा को स्वयं महसूस कर उसे अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त करते हैं। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में एक मजदूरनी की दयनीय स्थिति का चित्रण वे निम्नानुसार करते है :

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा छिन्नतार
देख कर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं
सजा सहज सितार
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार।[2]

निराला जी ने 'भिक्षुक' कविता में भिक्षुक के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है, जिसमें भारत के अनाथ एवं असहाय जीवन का जीता-जागता चित्र अंकित है, जो केवल कवि के कलेजे को ही दो टूक नहीं करता, अपितु सभी के हृदयों को भी विदीर्ण कर देता है :

वह आता
दो टूक कलेजे को करता, पछताता
पथ पर आता
पेट-पीठ दोनों मिल कर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठी भर दाने को-भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली का फैलाता।[3]

निराला की कविता में सामाजिक विषमता अत्याचार, शोषण एवं अन्य समाज विरोधी स्वार्थी लोगों के विरुद्ध कवि का आक्रोश, क्षोभ, एवं व्यंग्य का निरूपण हुआ है। वे सामाजिक विषमता को दूर करके सामाजिक समता स्थापित करना चाहते थे। 'कुकुरमुत्ता' में कवि ने पूंजीपतियों पर तीखा व्यंग्य किया है। पूंजीपतियों को वे आइना दिखा कर कहते हैं कि, तुम्हारी यह 'रंग-ओ-आब', चमक-दमक गरीबों के शोषण पर आधारित है। ऐसे पूंजीपतियों को वे प्रतीकात्मक शैली में फटकारते हुए कहते हैं:

अबे, सुन बे, गुलाब,
भूल मत जो पायी खुशबू रंग-ओ-आब।
खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतरा रहा कैपीटलिस्ट[4]

Scanned with CamScanner

कविवर ने 'बादल राग' कविता में बादल से आह्वान किया है कि वह विश्व के धनिक वर्ग पर अपने प्रचंड वज्र घोष से आतंक स्थापित करके विप्लवकारी गर्जना करे। साथ ही कृषकों के प्रति सहानुभूति की भावना रखते हुए आग्रह करते हैं–तुम भारत के इन दीन-हीन किसानों की पीड़ा भरी पुकार को सुन कर यहां विप्लव मचाने के लिए अवश्य आओ। जिस प्रकार कविवर निराला ने कृषकों, भिक्षुकों समाज के पीड़ितों की व्यथा को अंकित किया है उसी प्रकार स्त्री की पीड़ा को भी अंकित किया है। भारतीय समाज में बढ़ती नारी समस्या को अंकित करते हुए 'विधवा' की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्रण किया गया है। इसकी अभिव्यक्ति उन्होंने 'विधवा' कविता में की है। भारत की विधवा नारी अपने आधार तरु से अलग हो कर सुकुमार लता के समान दीन-हीन एवं दयनीय हो गयी है, इसका सूक्ष्म अंकन निम्न पंक्तियों में किया गया है :

वह इष्ट देव के मन्दिर की पूजा-सी
वह दीप शिखा-सी शान्त, भाव में लीन,
वह क्रूर काल-ताण्डव की स्मृति-रेखा-सी,
वह टूटे तरु की छुटी लता-सी दीन
दलित, भारत की ही विधवा है।[5]

कवि ने विधवा की पवित्रता, शुचिता, शांति, दुर्भाग्य, दीनता, एवं दलितावस्था का प्रभावशाली चित्रण किया है। 'बेला' और 'नये पत्ते' में कवि की काव्य-चेतना का नव-विकास दृष्टिगोचर होता है। 'बेला' की भूमिका में दार्शनिक एवं राष्ट्रीय विचारों की अभिव्यक्ति अत्यंत सरल एवं मुहावरेदार शैली में हुई है। निराला जी ने अतीत गौरव का गान करते हुए जिस राष्ट्रीयता को विकसित किया है वह उनकी 'मातृ वंदना', 'जागो फिर एक बार', 'छत्रपति शिवाजी का पत्र', 'भारति, जय विजय करे' जैसी कविताओं में मुखरित हुई है। इसका एक उदाहरण दृष्टव्य है :

भारति, जय, विजय करे।
कनक-शस्य-कमल धरे
लंका पदतल-शतदल
गर्जितोर्मि सागर-जल
धोता-शुचि चरण युगल
स्तव कर बहु-अर्थ-भरे।

उनकी कविता में राष्ट्रीयता कूट-कूट कर भरी है। उन्होंने हमेशा भारतीय जनता को भारत की परतंत्रता के प्रति जागरूक करना अपना परम कर्त्तव्य माना है। 'जागो फिर एक बार' कविता के द्वारा भारतीय वीरों का आह्वान करते हैं :

शेरों की माँद में
आया है आज स्यार
जागो फिर एक बार।
तुम हो महान्
तुम सदा हो महान्,
है नश्वर यह दीनभाव
पदरज भर भी है नहीं
पूरा यह विश्व भार
जागो फिर एक बार।।[6]

Scanned with CamScanner

कवि का हृदय भारत की सामाजिक विषमता, रुढ़ियों से व्यथित है। वह भारतमाता को परतंत्रता से मुक्त करना चाहता है। सामाजिक विषमता को देख कर कवि मां दुर्गा से प्रार्थना करता है कि समाज की यह विषमता नष्ट हो जाये और समाज में नव-जीवन का संचार हो।

कवि निराला जी सामाजिक विषमता तथा मानवता की हृदय विदारक पीड़ा, करुणा, विवशता, परतंत्रता, अत्याचार से इतना अधिक क्षुब्ध हो उठे कि उनके प्रत्येक स्वर में विद्रोह की आग भरी हुई प्रतीत होती है। कवि युग-युग से प्रताड़ित, प्रपीड़ित, एवं प्रवंचित मानव पर हो रहे अत्याचार से, कायरता से जगा कर नये युग के निर्माण का संदेश देता है। निराला की व्यंग्य-दृष्टि से तत्कालीन जीवन का कोई दृश्य छूटा नहीं है। उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से सामंतवादी व्यवस्था पर प्रहार किया है तो कभी जमीदारों, अमीरों, एवं अंग्रेजों के अत्याचार का पर्दाफाश किया है। उनकी कविताओं में शोषकों, साम्राज्यवादियों, एवं पूंजीपतियों के प्रति आक्रोश है। इसी तरह राष्ट्रभक्ति, स्वातंत्र्य चेतना, आत्मगौरव के भाव, मानवता, भगवद्भक्ति, रक्त-क्रांति की प्रेरणा, और नवनिर्माण का मंगल संदेश उनके काव्य का केंद्रीय पक्ष है।

संदर्भ

1. डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिंदी के प्रतिनिधि कवि, पृ. 190
2. निराला, अनामिका, पृ. 79
3. वही, परिमल, पृ. 133, 134
4. वही, कुकुरमुत्ता
5. वही, विधवा
6. वही, परिमल, पृ. 203

Scanned with CamScanner